हिंदू और हिंदुत्व के बारे में लिखी आपत्तिजनक बातें 6

सूर्य नमस्कार का बनने वाला है विश्व रिकॉर्ड 11

कड़ाके की सर्दी और राष्ट्र सेवा का संकल्प 16

पाक्षिक

पाथेय कण

₹ 5

www.patheykan.com

पौष शुक्ल 14, वि.2078, युगाब्द 5123, 16 जनवरी, 2022

भीतर की शांति के लिए साधना व अध्यात्म की शरण में आना होगा-आचार्य महाश्रमण

सऊदी अरब में बच्चों को पढ़ाई जा रही है रामायण और गीता

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

आपने लिखा है

एक से बढ़कर एक बलिदानी सपूत हुए हैं भारत में

'केरल के मोपलाओं द्वारा हिन्दू नरसंहार के 100 वर्ष' वाला अंक जब से पढ़ा था, दिमाग में मोपला घूम रहे थे। एक मसाज सेंटर पर मसाज करने वाली महिला मोपला गांव से थी। उसने बातचीत में बताया कि एक समय ऐसा था जब मोपला जिले में एक भी हिंदू नहीं बचा था, कमोबेश कश्मीर जैसा हो गया था मोपला क्षेत्र। लेकिन अब काफी हिंदू वहाँ पर हैं।

स्वराज संघर्ष यात्रा विशेषांक बहुत पसंद आया। ग्रामोत्थान व स्त्री शिक्षा की अलख जगाने वाली रत्ना शास्त्री पर कभी अधिक सामग्री दें। दिसम्बर माह के अंक में पता चला कि इस माह में हमारे देश में एक से बढ़कर एक अविस्मरणीय होनहार बलिदानी सपूत हुए हैं। ऐसे लोगों को हृदय से शत-शत नमन।

● **श्रीमती प्रेमलता गुप्ता** ,त्रिवेंद्रम, केरल

बिरसा मुंडा

पाथेय कण का बिरसा मुंडा जयंती 'जनजातीय गौरव दिवस' अंक पढ़कर बहुत अच्छा लगा। बिरसा ईसाइयत में दीक्षित जरूर थे, किन्तु उनके हृदय में जंगल एवं सनातन परम्परा विराजमान थी। आदिवासी क्षेत्रों में आज भी बिरसा को 'भगवान बिरसा' कह कर श्रद्धा से याद किया जाता है। युवा उन्हें आदर्श मानते हैं।

पाथेय कण के इसी अंक में 'युद्ध जीत कर टेबल पर क्यों हारा भारत' एवं 'अच्छे कार्यों का सम्मान' जैसे विषयों को बहुत ही अच्छी तरह से प्रकाशित किया गया है, पढ़कर बहुत रोचक लगा।

● **राजेश सोनी**, रावतभाटा

शौर्य व पराक्रम की गाथा

16 दिसम्बर के अंक के मुख पृष्ठ पर अजेय हिंदू धर्म योद्धा वीर शिरोमणि महाराजा सूरजमल और लोहागढ़ दुर्ग का चित्र अपनी वीरता, शौर्य और पराक्रम की गाथा गाता हुआ प्रतीत हो रहा है।

पत्रिका में महाराजा सूरजमल के बारे में पढ़ा तो उनकी जीवनी से बड़ी प्रेरणा मिली। महाराजा सूरजमल की नीति-कुशलता, युद्ध शैली और उनकी पराक्रम गाथाओं से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए।

● **कवि विकास निठारवाल**, किशोरपुरा,फागी,जयपुर

सभी को पढ़नी चाहिए

देश में सैकड़ों महापुरुषों का इतिहास व चेहरे छिपा दिए गए मगर आज पाथेय कण के माध्यम से हम पढ़ पा रहे हैं। पाथेय कण हिन्दू समाज के प्रत्येक व्यक्ति को पढ़नी चाहिए।

● **ललित मेनारिया**, उदयपुर

चित्रकथा पाठ्यक्रम में शामिल हो

अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित चित्रकथा 'सुभाष चन्द्र बोस' अत्यंत प्रेरणादायक हैं। इसे पुस्तक रूप में विद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। छात्रों के लिए अत्यंत प्रेरक एवं रुचिकर पाठ्य सामग्री होगी।

● **पोखरलाल गुर्जर**, गिरधरपुरा, भीलवाड़ा

प्रासंगिक जानकारी

16 दिसम्बर अंक के संपादकीय में बहुत ही प्रासंगिक जानकारी दी गई है। स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द व भगिनी निवेदिता के कथन प्रेरणादायी हैं। बंकिमचंद्र चटर्जी का वन्देमातरम्, तमिल भाषा के महाकवि सुब्रमण्यम भारती की कविताओं का भाव भी मातृभूमि के प्रति अगाध निष्ठा हृदय में जगाता है। महाराजा सूरजमल का पराक्रमी इतिहास छात्रों के लिए प्रेरणादायी रहेगा। 'जागो ग्राहक जागो' में ग्राहकों के अधिकार के बारे में जानकारी उत्तम लगी। पाथेय कण में दी गई बाल प्रश्नोत्तरी से बालकों में अच्छे संस्कार प्राप्त होंगे।

● **विमलेश गुप्ता**, लालसोट, दौसा

महाराजा सूरजमल

स्वाभिमानी व पराक्रमी महाराजा सूरजमल की आमुख कथा पढ़कर ज्ञात हुआ कि कैसे मुगलों के विरुद्ध अभियान में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, गुर्जर, मैना आदि सर्वजातीय वर्गों का सहयोग लेकर जन-जन के हिंदू हृदय पर राज करने वाले अप्रतिम योद्धा बने महाराजा सूरजमल।

● **सुनील पारीक**, भांकरी,पावटा,जयपुर

समाज के लिए अनुकरणीय

गुरु तेगबहादुर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विराट झांकी के जीवंत दर्शन हुए। उनकी शिक्षाओं, राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी व सामाजिकता की मूर्त चेतना के संग पारिवारिक बलिदान का ज्ञान प्राप्त हुआ। क्रांतिकारी भाई हिरदाराम के जीवन और जेल यातनाओं के दुखदाई एवं मार्मिक प्रसंग तथा क्रांति से अलख जगाने का जो बीड़ा उन्होंने उठाया उसे प्रशंसा योग्य ही कहा जाएगा। इस अंक ने सेवा के पर्याय ठक्कर बापा के शाब्दिक दर्शन भी करवाए जिन्होंने सामाजिक रूप से अंतिम पायदान पर बैठे असहाय, जरूरतमंद, लाचार एवं पीड़ित की सेवा का पाठ पढ़ाया। यकीनन ऐसे महापुरुष समाज के लिए अनुकरणीय ही कहे जाएंगे। (संदर्भ-16 नवम्बर अंक)

● **महेश चौधरी**, भूणिया, बाड़मेर

पाक्षिक
पाथेय कण
पौष शु.14 से माघ कृ.14 तक
विक्रम संवत् 2078,
युगाब्द 5123
16-31 जनवरी, 2022
वर्ष 37 : अंक 18

अपनी बात

आदरणीय पाठक गण,

सादर जय श्रीराम।

मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर परिवर्तन के इस पवित्र काल का लाभ उठाकर आपने अपने ग्राम एवं नगर में सामाजिक समरसता हेतु सम्पर्क किया होगा।

पाथेय कण का भी हर वर्ष की तरह अपना सदस्यता अभियान आगामी दो मास में पूरा करने का क्रम चलेगा। इस निमित्त हम अपने-अपने स्थान पर तथा आस पास के ग्रामों में जहां पाथेय कण नहीं पहुँचता,अवश्य ही सम्पर्क करने की योजना अभी से बनायेंगे, ऐसा आग्रह है।

जहाँ कहीं डाक की अव्यवस्था से अंक नहीं पहुंचता हो वहां अपने क्षेत्र की स्वयं व्यवस्था करने का भी कष्ट करें। पाथेय कण की ओर से पूरा सहयोग रहेगा।

आपका
माणक चंद
प्रबंध संपादक

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

- सम्पर्क -
प्रबंध : 99297 22111
प्रेषण : 86192 73491

E-mail: patheykan@gmail.com
Website: www.patheykan.in

हमारा प्राचीन साहित्य

किसी भी देश के साहित्य से उस देश की संस्कृति, सभ्यता, दर्शन-चिंतन, इतिहास आदि की जानकारी होती है। प्रसिद्ध पाश्चात्य लेखक मार्क ट्वेन ने कहा है, ''मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवान एवं सृजनशील सामग्री है उसका भंडार अकेले भारत में है।'' यह सृजनशील सामग्री यहां के साहित्य अर्थात् वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, सभी दर्शन, जैन आगम, बौद्ध त्रिपिटक, गुरु ग्रंथ साहिब सहित संतों के उपदेशों आदि में समाई हुई है।

इन ग्रंथों को मात्र धार्मिक ग्रंथ समझ लिया गया है, जबकि इनमें इस देश का इतिहास, संस्कृति, चिंतन व विज्ञान समाया हुआ है। उपरोक्त ग्रंथों से इतर भी अनेक भारतीय ग्रंथ सांसारिक विषयों की जानकारी देते हैं। उदाहरण के लिए कल्हण द्वारा लिखित 'राजतरंगिणी' में कश्मीर के सभी राजाओं के शासनकाल की जानकारी सहित राजा और उसके शासन से संबंधित तथ्यों का उल्लेख किया गया है। विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस' में सिकंदर के आक्रमण के बाद की भारतीय राजनीति का उल्लेख है। पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' में व्याकरण के अलावा मौर्य पूर्व और मौर्यकालीन राजनीतिक व्यवस्था का वर्णन है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के बारे में तो अब बहुत लोगों को जानकारी हो गई है। इसमें राजा के कर्तव्य, शासन व्यवस्था, न्याय आदि कई विषयों की चर्चा है। पतंजलि के 'महाभाष्य' में राजनीति के बारे में भी लिखा गया है। 'शुक्रनीतिसार' में उस समय की विधि, राजनीति और भारतीय समाज का वर्णन है। स्मृतियों में वर्णित तत्कालीन न्याय व्यवस्था, विधि, विधि के सिद्धान्त आदि आज के समय में भी प्रासंगिक हैं। तमिल और अन्य भारतीय भाषाओं में भी ऐसे ग्रंथ लिखे गए। आज से 2500 वर्ष पूर्व तमिल भाषा में संगम साहित्य लिखा गया। इसमें 473 कवियों की 2389 रचनाएं हैं। इस साहित्य में उस समय के तीन राजवंशों-चोल, चेर एवं पांड्य का वर्णन है। यह सारा उल्लेख उदाहरण मात्र ही है, न कि विस्तृत।

प्रसिद्ध जर्मन विद्वान शोपन हॉवर ने उपनिषदों का लैटिन भाषा में किया गया अनुवाद पढ़ा तो उनके मुँह से निकला, 'उपनिषद सर्वोच्च मानव बुद्धि की उपज हैं।' विद्वान हम्बोल्ट गीता को संसार की गम्भीरतम और उच्चतम कृति मानते थे। हमारे देश की प्राचीन काल से वर्तमान तक की सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा ज्ञान-विज्ञान संबंधी जानकारी और विकास यात्रा इन ग्रंथों में संचित है। इन ग्रंथों में ऐसा तत्व चिंतन भी है जो विश्व में शांति, न्याय और सद्भावना की स्थापना करते हुए उसे एक सूत्र में पिरोने में सक्षम है।

परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि अंग्रेजों द्वारा बनायी गई शिक्षा-पद्धति में हमें इस साहित्य संपदा की जानकारी नहीं हो पायी। परिणामतः हमारी कई पीढ़ियाँ और वर्तमान युवा पीढ़ी भी, इस देश की संस्कृति, परम्परा, तत्वचिंतन, ज्ञान-विज्ञान और जीवन-दर्शन से परिचित नहीं है। दुनिया को हमने बहुत कुछ दिया है, परन्तु इसकी जानकारी शिक्षित व्यक्तियों को नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत का समाज-भारत के लोग अपनी जड़ों से कट गए।

स्वाधीनता के बाद इस स्थिति में बदलाव आना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। अमृत महोत्सव के अवसर पर बनी नई शिक्षा-नीति से यह संभव हो सकेगा, इसकी संभावना बनी है।

पाथेय कण में इस विलुप्त साहित्य संपदा का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास रहेगा।●

– रामस्वरूप अग्रवाल

संघ के कार्यक्रम में पधारे आचार्य महाश्रमण

भीतर की शांति के लिए साधना व अध्यात्म की शरण में आना होगा- आचार्य महाश्रमण

सुविधा तथा शांति में भेद को समझना चाहिए। शांति का संबंध भीतर से है। भौतिक संसाधन सुविधा दे सकते हैं किंतु भीतर की शांति के लिए साधना व अध्यात्म की शरण में आना होगा। ये विचार जयपुर की अंबाबाड़ी में चल रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्राथमिक शिक्षा वर्ग में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें महाशास्ता आचार्य महाश्रमण ने व्यक्त किए हैं।

उन्होंने जैन आगम तथा गीता के उदाहरण से आत्मा की नश्वरता, पुनर्जन्म, मोक्ष, सत्कर्म, शांति व अध्यात्म को सरल शब्दों में समझाया। उत्तम कर्मों की प्राप्ति के लिए राग, द्वेष, क्रोध जैसी वृत्तियों पर नियंत्रण तथा इसके लिए सन्मार्गदर्शन व भारत की विशाल ग्रन्थ संपदा के अध्ययन का महत्व बताया।

स्वयंसेवकों को कार्यकर्ता का अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि जो परहित के लिए कार्य करता है वह कार्यकर्ता है। सुख-दुःख, मान-अपमान की चिंता किए बिना साधनापूर्वक कार्य करने से जीवन सफल होता है। साधना और त्याग से कार्य में सफलता मिलती है।

आचार्य ने अहिंसा यात्रा का उद्देश्य बताते हुए सद्भावना, नैतिकता व नशा मुक्ति पर बल दिया। प्रबोधन के अंत में उन्होंने विश्व कल्याण हेतु मंगलपाठ किया। इससे पूर्व उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालय 'स्वस्तिक भवन' में मंगलाचरण व पदार्पण किया।

समारोह में संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के विशेष आमंत्रित सदस्य और वरिष्ठ प्रचारक श्री हस्तीमल, श्री शंकरलाल, क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम, राजस्थान क्षेत्र संघचालक डॉ. रमेश अग्रवाल, वरिष्ठ प्रचारक श्री रामप्रसाद, सेवा भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री मूलचंद, पाथेय कण के प्रबंध संपादक श्री माणकचंद , रेवासापीठाधीश्वर राघवाचार्य जी महाराज, रमणनाथ जी महाराज, भावनाथ जी महाराज सहित संघ एवं विविध संगठनों के प्रमुख कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

आचार्य श्री ने श्याम नगर स्थित भिक्षु साधना केन्द्र में वर्चुअल रूप से श्रद्धालुओं को चार कलाओं में से प्रथम-क्रोध को शांत करने के लिए ध्यान, जाप, दीर्घश्वास आदि का प्रयोग करने की प्रेरणा दी।

महामृत्युंजय यज्ञ

आचार्यश्री के जाने के पश्चात् प्रशिक्षण वर्ग में 'महामृत्युंजय यज्ञ' किया गया। ●

सऊदी अरब में बच्चों को पढ़ाई जा रही हैं रामायण और गीता

सभी हदीसें बाध्यकारी नहीं– प्रिंस सलमान

एक ओर जहां भारत में कई मुस्लिम संगठनों द्वारा स्वाधीनता के अमृत महोत्सव में होने वाले देशव्यापी कार्यक्रम 'सूर्य नमस्कार' का विरोध किया जा रहा है वहीं अब तक कट्टर मुस्लिम देश माने जाने वाले देश–सऊदी अरब में इन दिनों बच्चों को रामायण और महाभारत पढ़ाई जा रही है।

सऊदी अरब के शासक प्रिंस मुहम्मद बिन सलमान के 'विजन 2030' के अंतर्गत स्कूली शिक्षा में विभिन्न देशों के इतिहास और संस्कृति को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। पाठ्यक्रम में हिंदू, बौद्ध धर्म, कर्म का सिद्धांत के अलावा भारतीय संस्कृति से जुड़ी अन्य कई बातें जैसे योग और आयुर्वेद को भी शामिल किया गया है।

रामायण व महाभारत पाठ्यक्रम में शामिल

पिछले दिनों इस बदलाव से जुड़ा हुआ एक ट्वीट सोशल मीडिया पर अत्यधिक वायरल हो रहा था। यह ट्वीट नूफ–अल–मरवाई नाम के अकाउंट से भेजा गया था। ट्वीट में इस महिला ने अपने बेटे की सामाजिक विज्ञान की परीक्षा से संबंधित पूछे गए प्रश्नों का 'स्क्रीनशॉट' शेयर किया था।

इस ट्वीट के कैप्शन में लिखा था, ''सऊदी अरब के लिए विजन 2030 और पाठ्यक्रम से एक ऐसा भविष्य बनाने में सहायता मिलेगी जो समावेशी, उदार और सहिष्णु होगा। मेरे बेटे की आज की सामाजिक विज्ञान परीक्षा के प्रश्न पत्र में हिंदू, बौद्ध धर्म, रामायण, कर्मा और महाभारत को सम्मिलित किया गया है। मुझे उसे पढ़ाने में मजा आता है।''

सऊदी अरब में अब इस्लाम से पहले के और इस्लाम से भिन्न अपने इतिहास और संस्कृति को महत्व दिया जा रहा है।

सभी हदीसें बाध्यकारी नहीं – इस्लाम में पवित्र कुरान के बाद हदीस सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। हदीस में पैगम्बर मुहम्मद के कथन, कार्य, व्यवहार और आदतों का वर्णन है। सभी मुसलमान इन्हें मान्य कर वैसा ही आचरण करते हैं।

राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर और वरिष्ठ स्तंभकार शंकर शरण ने अपने एक आलेख में सऊदी अरब के शासक प्रिंस मुहम्मद बिन सलमान के 'अल–अरबिया' चैनल पर आए एक इंटरव्यू (साक्षात्कार) का उल्लेख किया है, जिसमें प्रिंस सलमान ने कहा है कि अरब का संविधान कुरान है, उसका पालन होता रहेगा, किंतु कुरान के स्पष्ट निर्देशों के अलावा अन्य कायदों (हदीस) पर बाध्यता अनुचित है।

श्री शंकर शरण के अनुसार यहां प्रिंस सलमान ने एक नई बात कह दी। प्रिंस के अनुसार हदीसों में केवल उन्हीं हदीसों को सही माना जाएगा, जिन्हें कई स्रोतों ने दोहराया हो। प्रिंस के अनुसार अधिकांश हदीसें ऐसी हैं, जिन्हें कदापि बाध्यकारी नहीं माना जा सकता। स्पष्ट है कि शरीयत के अधिकांश निर्देश निष्प्रभावी हो जाएंगे।

श्री शंकर शरण के अनुसार,'' प्रिंस सलमान कुरान और सुन्नी की व्याख्या करते हुए सऊदी नागरिकों के हित, सुरक्षा, देश की उन्नति और अंतरराष्ट्रीय नियमों का ध्यान रखना जरूरी मानते हैं।'' अर्थात् देश हित को महत्व देते हैं।

अब सऊदी अरब के लोग इस्लाम से पूर्व और इस्लाम से भिन्न अपने इतिहास और संस्कृति को महत्व दे रहे हैं। यह बुनियादी परिवर्तन का संकेत है, जिसे भारतीय मुसलमानों को भी ध्यान देना चाहिए। ●

राजस्थान पत्रिका के संपादक ने

'हिंदू' और 'हिंदुत्व' के बारे में लिखी आपत्तिजनक बातें

संघ के क्षेत्रीय कार्यवाह ने लिखा खुला पत्र

राजस्थान के प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र 'राजस्थान पत्रिका' के संपादक श्री गुलाब कोठारी ने 3 जनवरी, 2022 को पत्रिका के मुख पृष्ठ पर 'हिंदू कौन' शीर्षक से लिखे अग्रलेख में निम्नांकित घोर आपत्तिजनक बातें लिखी हैं–

''... जब से मुस्लिम शब्द सम्प्रदाय रूप में उभरकर आया, हिंदू शब्द इसके विरोध में सम्प्रदाय का वाचक हो गया।... मुस्लिम विरोधी व्यक्ति जिसका कोई अन्य सम्प्रदाय (ईसाई–सिख–जैन आदि) न हो, वह हिंदू हो गया। शब्द की उत्पत्ति, मूल में पाकिस्तानी मुसलमानों के खेमे से हुई जान पड़ती है, किन्तु कैसे भारतीयों ने अपने लिए स्वीकार लिया, आश्चर्य है।

... मुस्लिम विरोधी कितने ही सम्प्रदाय इस शब्द (हिंदू) में समाहित हो गए। कई शास्त्रों के नाम हिंदू शब्द से जुड़ गए। यह बड़ी शर्म की बात है।...एक कहावत है कि बंदर के हाथ में उस्तरा दे दो, वह खुद को लहूलुहान कर लेगा। यही हाल आज हिंदुत्ववादियों ने अपना कर लिया। .... एक मुखौटा, जिसके नीचे कोई चेहरा नहीं, वह हिंदू है।''और भी कई आपत्तिजनक बातें।

श्री गुलाब कोठारी पूर्व में हिंदू दर्शन (आत्मा–परमात्मा, स्त्री–पुरुष संबंध आदि) पर कई लेख लिखते रहे हैं, जिससे उनकी छवि एक विद्वान की बनी थी। ऐसा व्यक्ति 'हिंदू' के बारे में ऐसी वाहियात, अनर्गल,आपत्तिजनक और ओछी बातें कैसे लिख सकता है? या तो यह अग्रलेख 'हिंदू कौन' गुलाब कोठारी द्वारा लिखा गया नहीं है, या फिर यदि उनका स्तर ऐसी निम्न श्रेणी की बातें लिखने का है, तो फिर, पूर्व में इनके नाम से छपा साहित्य इनका नहीं हो सकता। श्री गुलाब कोठरी को इस बाबत स्पष्ट करना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजस्थान क्षेत्र कार्यवाह श्री हनुमान सिंह ने गुलाब कोठारी को उनके लेख 'हिंदू कौन' के संबंध में तार्किक और विद्वतापूर्ण पत्र लिखा है। राजस्थान पत्रिका में सम्पादकीय पृष्ठ पर वाल्तेयर का वाक्य '' हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकार की रक्षा करूंगा।'' छापा जाता रहा है। राजस्थान पत्रिका प्रबंधन और श्री गुलाब कोठारी यदि वास्तव में ही इस वाक्य में विश्वास रखते हैं, तो उन्हें श्री हनुमान सिंह का पत्र राजस्थान पत्रिका में छापने का साहस करना चाहिए।

श्री हनुमान सिंह का श्री गुलाब कोठारी के नाम खुला पत्र–

दिनांक–04–01–2022
स्थान–अजमेर

आदरणीय श्री गुलाब कोठारी जी,
सादर नमस्ते।

कल राजस्थान पत्रिका में ''हिंदू कौन'' शीर्षक से सम्पादकीय में लेखक के रूप में आपका नाम देखकर उत्पन्न संशय का निवारण करने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ। आपके नाम का यह आलेख समाचार पत्र में सार्वजनिक हुआ है अतः पत्र भी खुले में लिखने की विवशता है। आप स्वयं को वेद वाङ्मय का अध्येता कहते हैं अतः एक बार तो विश्वास ही नहीं हुआ कि आप ऐसा अतार्किक, राजनीतिक मंचों के भाषण जैसा विदूषकीय प्रलाप कर सकते हैं।

आदरणीय, यदि यह आपका ही लिखा है तो कृपया संज्ञान में लें कि न भाषा भूगोल पर आश्रित होती है न संवाद वाणी पर। भाषा भूगोल पर आधारित होती तो अंग्रेजी और अरबी भारत में नहीं आती और संस्कृत बाहर नहीं जाती। गाय अमेरिका में अंग्रेजी में रम्भाती नहीं है और न कौआ भारत में अरबी बोलता है। यदि भाषा भूगोल व वाणी की मोहताज होती तो ब्रेल लिपि,मूक–बधिर की संकेत भाषा बीस कोस पर बदलती रहती। जालौर की तरफ च को च ही लिखते हैं उच्चारण कुछ भी हो। सड़क को हड़क लिखते तो सिंध प्रांत कभी का हिन्द प्रांत हो जाता, वह तो पाकिस्तान में जाने के बाद भी अभी तक सिंध और वहाँ के निवासी विस्थापित होकर भारत आ गए तो भी अभी तक सिंधी कहलाते हैं।

संस्कृत के सिंधु शब्द का किसी भारतीय भाषा में ''हिंदु'' यह रूप नहीं हुआ, क्योंकि संस्कृत के किसी भी शब्द के आरम्भ का संयुक्त ''स्''प्राकृत भाषा में भी यथावत ''स्'' ही रहा है, परिवर्तित नहीं हुआ। यथा – सुप्त–सुत्त, सप्त–सत्त, सद्भाव–सब्भाव, सौभाग्य–सोहग्ग, सत्य–सच्च, सुख–सुह, सैन्य–सेण्ण, सर्प–सप्प, सर्व–सव्व ।

आप तो जैन हैं अतः प्राकृत शब्दों से परिचित हैं ही!

प्राकृत भाषाओं से आगे परिवर्तन होकर अपभ्रंश भाषाएँ अस्तित्व में आई। उन अपभ्रंशों से परिवर्तित होकर आजकल की हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं

की परम्परा चली। इनमें भी सर्वत्र शब्द के आरम्भ का ''स्''यथावत बना रहा है,''ह'' नहीं हुआ है। यथा पंजाबी में सत्त और हिन्दी में सात (7) का ''स्'' संस्कृत के सप्त के ''स्'' को यथावत रखे हुए है।

आज के इस्लामी पाकिस्तान में लगभग 75 वर्ष के बाद भी सिंधु नदी ''सिंध दरिया'' और सिंध सूबा ही है तब आपका कथन 'हिन्दुस्तान (मुस्लिम सानिध्य से) कहलाने लगा' कहाँ टिकता है आप सोच सकते हैं तो देखिए।

संस्कृत का स् परिस्थिति विशेष में ग्रीक भाषा में ह् बना है। जैसे संस्कृत के सप्त का ग्रीक में हेप्टा । ऐसा rough breathing में होता है। Soft breathing में ऐसा नहीं होता। अतः ग्रीक में सिंधु का हिंदु होना सम्भव नहीं। जैसे अंग्रेजी में honest के h का उच्चारण नहीं होता। सिंधु के लिए ग्रीक में Indu /Indi ऐसा उच्चारण किया। ग्रीक के माध्यम से ही लैटिन में सिंधु को Indus के रूप में उच्चारा। पारसियों की भाषा के प्राचीनतम ग्रन्थ जेन्द-अवेस्ता में संस्कृत के पदादि स् का ह् पाया जाता है। जैसे-सप्त-हफ्त, सर्व-हर्व, असुर-अहुर, सरस्वती-हरहवती। अतः संस्कृत का सिंधु शब्द जेंद-अवेस्ता में ही ''हिंदु'' हो गया था।

पारस देश अर्थात् ईरान वृहत्तर सांस्कृतिक भारत का ही भाग था अतः यह भौगोलिक व इस भौगोलिक क्षेत्र के निवासियों का हिंदू नाम विदेशी या मुस्लिम संसर्ग का परिणाम नहीं है। इस नाम को धारण करना गौरव का विषय माना जाता था। आपको पता है कि हजरत मोहम्मद की एक पत्नी का नाम ''हिन्द'' था? आज जो फारसी शब्दकोश से हिंदू का अर्थ खोजने का प्रयत्न करते हैं वह अफगानिस्तान के इस्लामीकरण के बाद भारत को ''दार-उल-इस्लाम'' न बना पाने की मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' के शब्दों में व्यक्त कुण्ठा है-

वह दीन-ए-हिजाजी का बेबाक बेड़ा,
निशां जिसका अक़्सा-ए-आलम में पहुँचा।
मुज़ाहिम हुआ कोई खतरा न जिसका,
न अम्मान में ठिटका न कुलजम में झिचका।
किये पे सिपर जिसने सातों समन्दर,
वह डूबा दहाने में गंगा के आकर।

अब प्रश्न आता है ''हिंदू धर्म''शब्द प्रयोग का। आपका कथन सत्य है कि यह नाम वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों में नहीं है, यदि होता तो आश्चर्य होता क्योंकि धर्म अपने आप में ही पूर्ण शब्द है, इसे किसी विशेषण की आवश्यकता ही नहीं है। किसी वेद में वैदिक धर्म लिखा है क्या? क्या तीर्थंकरों ने जैन धर्म की तथा भगवान बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की घोषणा की थी? पर ये नाम उपलब्ध हैं। अतः मानना पड़ेगा कि कालांतर में किसी ने दिये हैं। क्यों दिये? क्योंकि उनकी पृथक पहचान को इंगित करना था। धर्म के परास (प्रभाव क्षेत्र) में भी कई बातें जुड़ती गईं जैसे - वस्तु धर्म, वर्णाश्रम धर्म, गुण धर्म, कुल धर्म, संतति धर्म व पितृ धर्म आदि। अतः सापेक्ष धर्म से पृथक् पहचान के लिए सर्वप्रथम ''सनातन धर्म'' शब्द प्रयोग प्रचलन में आया। कालांतर में इसका भी अर्थ संकुचित कर दिया गया-सनातनी अर्थात् मूर्ति पूजक। धर्म वास्तव में सनातन व एक ही है - धारणात् धर्म अर्थात् जिन नीति-नियमों से प्रजा का धारण होता है, यतो अभ्युदय निश्रेयस् सिद्धिः अर्थात् जिससे इहलौकिक वैभव तथा पारलौकिक सिद्धि (मोक्ष, कैवल्य) होती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति कैसे होगी? अतः कहा कि यह जीवन कैसे जीना इसका दर्शन धर्म है और यह जीवन धर्ममय है इसका आकलन लक्षणों से होता है। मनु के शब्दों में दशकम् धर्म लक्षणम्। भारत उद्भूत जितने मत-पंथ-सम्प्रदाय हैं वे इन धारण करने योग्य लक्षणों,आचार-पद्धति में एक मत हैं, केवल उपासना पद्धति में भिन्नता है अतः सब धर्म की श्रेणी में आते हैं और बाहर से आने वाले मजहबों, रिलीजन से इनको पृथक पहचान देने के लिए हमारी राष्ट्रीयता के लिए प्रयुक्त शब्द हिंदू ही धर्म वाचक भी बन गया जो सर्वसमावेशी है-इसमें मोहम्मद पंथी और ईसा पंथी भी समा सकते हैं, समा रहे हैं। उपासना पद्धति के कारण झगड़े को तो ''एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'' कहकर वेद ने सभ्यता के प्रारम्भ में ही समाप्त कर दिया था। यदि सैमेटिक मजहबों की विचारधारा हिंदू को मान्य होती तो हिंदू शब्द मुस्लिम के विरोध में आया तथा हिंदू भी सम्प्रदाय का वाचक हैं ऐसा कहने पर ब्लासफेमी के आरोप में पकड़े जाते या सर तन से जुदा के नारे और सर की कीमत लग रही होती। हिंदू धर्म ने शास्त्रार्थ की परम्परा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अन्तर्गत चार्वाक् को भी अपना मत रखने को अवकाश दिया है किंतु आपने हिंदू धर्म की तुलना इतनी घटिया उपमा से की है कि आपने अपना ही स्तर घटा लिया। हिंदू न कभी सम्प्रदाय था, न हो सकता है, हाँ हिंदू में सम्प्रदाय हो सकते हैं। आपको यदि लगता है कि कुछ लोग मुस्लिम सम्प्रदाय की तरह या प्रतिक्रिया में हिंदू धर्म को सम्प्रदाय वाचक बना रहे हैं, तो आप किसे हिंदू धर्म मानते हैं, उसे सबके समक्ष प्रस्तुत कर जन प्रबोधन कीजिए, न कि भ्रमित करने वाली स्तरहीन तुलना। शेखचिल्ली की तरह ''तुक नहीं मिली तो क्या वजन तो लगेगा ही'' का तर्क उचित नहीं है।

आप सत्य कहते हैं कि हिंदू की कोई एकमत स्वीकृत परिभाषा नहीं है। परिभाषा का जंजाल पश्चिम का बुना हुआ है। सबको परिभाषा के पायजामे में फिट करने का प्रयत्न सर्वत्र उचित नहीं है। क्या आप जीवन की परिभाषा दे सकते हैं? परिभाषा सम्प्रदाय की हो

सकती है, धर्म के तो लक्षण हो सकते हैं । विराट को शब्दों में बांधना हो तो नेति–नेति से आगे गति नहीं है। 'हिंदू का अर्थ मुस्लिम विरोधी है' आपकी यह परिभाषा तो राहुल गाँधी भी स्वीकार नहीं करेंगे, क्योंकि उनकी परिभाषा में ''हिंदू अच्छा है हिंदुत्व खराब है।'' शायद आप तो सर्वोच्च न्यायालय के ''हिंदुत्व जीवन–पद्धति है'' की परिभाषा को भी नहीं मानते?

हिंदू यदि जीवन–दर्शन है तो यह जीवन के हर क्षेत्र में दृष्टिगोचर होना चाहिए, अतः आप क्यों चाहते हैं कि राजनीति स्वत्व के इस दर्शन से अलिप्त रहे? Hindu polity आज की आकांक्षा और भारत के उज्ज्वल भविष्य की आवश्यकता है। शास्त्रों के नाम हिंदू शब्द से जुड़ना गर्व की बात है, जिम्मी मानसिकता (अपने समुदाय के प्रति हीन भाव) वाले को ही यह शर्म की बात लग सकती है। 'हिंदू शब्द का प्रयोग करने वालों को अपनी संस्कृति का कितना ज्ञान है' यह व्यंग्य करना देश–विदेश में रहने वाले करोड़ों हिंदुओं का अपमान है। हिंदुओं को आपसे प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है। हिंदू का आचरण आज भी सबसे सौम्य और उदात्त है। हिंदुवाद , हिन्दुइज्म जैसे शब्द भी आपके मस्तिष्क में पश्चिम ने ठूंसे हैं और आप उनकी जुगाली कर रहे हैं, हिंदू वाद का नहीं संवाद का नाम है। बवासीर को उसके नियत स्थान से ही निकलने देना उचित है, हम क्यों पीक की तरह थूकें?

यह सत्य है कि ''बंदर के हाथ में उस्तरा दे दो,वह खुद को ही लहूलुहान कर लेगा'' पर आपने जो भी अनर्गल लिखा है वह क्यों संभव हुआ? क्योंकि आपके पास अखबार है और आप उसके मालिक हैं। अतः छापने वाले ''अहो रूपम् अहो ध्वनिः'' की तरह छापने को मजबूर हैं। अब उस्तरा किसके हाथ में हैं आप बतायें। मेरे प्रतिवाद को आप छापेंगे नहीं क्योंकि मेरे पास अखबार नहीं है और सोशल मीडिया नहीं होता तो आपका लेख ''बाबा वाक्य प्रमाणम्'' हो जाता।

आदरणीय, उपासना व्यक्तिगत होती है धर्म नहीं। धर्म सर्वत्रव्यापी , सार्वभौमिक, सर्वकालिक, सर्वजनपालनीय होता है। तैंतीस करोड़ देवी–देवता कहने का अर्थ यही है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक उपास्य हो सकता है। धर्म प्रत्येक का अलग कैसे होगा? क्या धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रिय निग्रह, धी, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि की परिभाषा प्रत्येक की अलग होगी?

व्यक्तिगत डायरी में लिखना हो तो कुछ भी लिखा जा सकता है क्योंकि बुद्धि की सीमा होती है, मूर्खता की नहीं और डायरी निजी होने से कोई प्रभावित भी नहीं होगा। किंतु सार्वजनिक रूप से लेख प्रकाशित करते समय सोचना पड़ता है कि, संस्कृत में लिखा होने से सब सुभाषित नहीं होता, न ही अखबार में छपा ब्रह्म वाक्य ! जनता को आप कुछ भी परोस देंगे और वे मुंडी हिलाकर स्वीकार कर लेंगे। मूर्ख बनाने का वो काल व्यतीत हुआ।

सावधान इन्डिया!! भारत अपने स्वत्व को धारण कर निद्रा से जाग रहा है, अब उसे उधार की परिभाषाएँ नहीं चाहिए, उसे अपने सनातन विमर्श की स्मृतियाँ चैतन्य कर रही हैं। ईश्वर आपको सद्प्रेरणा दे।

आपका शभुेच्छु
हनुमान सिंह राठौड़

ब्रिटेन में बसा है एक हिंदू - संसार

● श्याम सुन्दर लदरेचा

मौसम परिवर्तन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ब्रिटेन (देश) के प्रवास के दौरान नेशनल हिंदू स्टूडेंट्स फोरम (यूके) के एक कार्यक्रम में रहना हुआ । यह संगठन पिछले 30 वर्षों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से विदेशी धरती पर सक्रिय विद्यार्थियों का संगठन है जो हिंदू विचारधारा व संस्कृति का पोषण करता आ रहा है। इस संस्था के कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने जो तथ्यात्मक जानकारियां प्रस्तुत कीं, वह मन को बहुत आनंद देने वाली थीं।

भारत पर अंग्रेजी शासन के दौरान भारत के बहुत सारे लोग अंग्रेजों के सहयोग व संरक्षण से अंग्रेजों के उपनिवेश वाले अफ्रीकी देशों में व्यापार करने जा बसे थे। हमारा देश आजाद हुआ तो उधर उन देशों में भी अंग्रेजी सत्ता कमजोर हो गई थीं। ऐसी स्थिति में उन लोगों के सामने राजनीतिक परेशानियां आने लगीं। इन देशों में छितरे हिंदू अलग–अलग समस्याओं से त्रस्त होने लगे थे। वह सब अब नए आशियाने की तलाश में थे। उस समय ग्रेट ब्रिटेन (यूके) ने दुनिया के इन हिंदुओं के लिए अपने दरवाजे खोल दिए। यही वह समय था जब सुदूर पश्चिम जैसे गुआना, सुदूर पूर्व जैसे फिजी व कई अफ्रीकी देशों से हजारों हिंदू ब्रिटेन में बसने को आए। इस प्रकार भारत के बाहर हिंदुओं को एक नया घर मिला। आज वह पूरे सम्मान के साथ निवास, व्यापार अथवा कारोबार कर उस भूमि को अपना

सर्वोत्तम दे रहे हैं।

एक बेहद दुःखद पड़ाव 1972 में युगांडा के शासक ईदी अमीन के समय आया, जिसने 90 दिन में युगांडा से एशियाई मूल के लोगों को भाग जाने की चेतावनी दी थी। कहते हैं उस समय हिंदुस्तानी मूल के 80 हजार लोग जान बचाने युगांडा से निर्वासित हुए, जिनमें से 27,200 हिंदुओं ने ब्रिटेन में शरण पाई थी।

अपनी मेहनत से खड़ी की गई जीविका व कमाई को छोड़कर वापस शून्य पर आ खड़े हुए विविध देशो में बसे ये हिंदू अपने इस नये देश में फिर शून्य से उबरने के प्रयास में लग गये।

1960 में हिंदुओं को हिंदुस्तान से बाहर अपना पहला मन्दिर उत्तरी इंग्लैंड की भूमि पर बनाने का सुख मिला। उस समय तक इस देश में हिंदुओं की संख्या लगभग 30 हजार पहुँच गई थी। लगभग उसी समय विश्व प्रसिद्ध बीटल्स बैंड के प्रमुख सदस्य श्री जॉर्ज हैरिसन ने लंदन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सैकड़ों बीघा भूमि खरीदकर अपने गुरु भक्ति वेदान्त प्रमुख को समर्पित की। हैरिसन ब्रिटेन के प्रभावी लोगो में से थे जिन्होंने हिंदू जीवन पद्धति को अंगीकार किया था। उनके द्वारा प्रदत्त बेशकीमती भूमि पर भक्ति वेदान्त का सबसे बड़ा केंद्र खड़ा है। यहाँ भक्तिवेदान्त (इस्कॉन) का मुख्यालय है ।

समय के साथ हिंदुओं का प्रभाव आकार लेने लगा। 1989 में भारत से बाहर पहली बार विराट हिंदू सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में एक लाख बीस हजार से ज्यादा हिंदू तथा 300 के लगभग हिंदू संस्थान एक साथ एकत्रित हुए। इस कार्यक्रम में विश्वभर के हिंदू नेता ही नहीं अपितु भारत से लता मंगेशकर, बाबा रामदेव, स्वामी चिन्मयानंद, मुरारी बापू, रमेश भाई ओझा जैसी हिंदू विभूतियों ने भाग लिया था। 1991 के आते-आते ब्रिटेन में हिंदू संख्या 3 लाख 97 हजार तक पहुंच गई।

परंतु 1992 के अंत व 1993 के आरम्भ में हिंदुओं के मंदिरों व व्यापारिक केन्द्रों पर ब्रिटेन में हमले हुए, जिनमें हिंदू समाज को 2 मिलियन पौंड का नुकसान हुआ। इसका सामूहिक व प्रभावी विरोध वहां हिदुओं के बैनर तले हुआ। परिणाम स्वरूप हिंदुओं तथा उनके मंदिर व व्यापार को ब्रिटेन की सरकार ने अतिरिक्त संरक्षण की व्यवस्था की। उन्हीं दिनों भारत के बाहर सबसे बड़े हिंदू मंदिर स्वामीनारायण सम्प्रदाय के मंदिर का उदघाट्न हुआ व लंदन में पहला हिंदू प्राइवेट स्कूल स्थापित हुआ। 2001 तक आते आते इस देश में हिंदू संख्या 5,58,810 पहुंच गई व 2011 तक 8,35,394 हो गई थी।

हिंदुओं ने इस देश को अपने पसीने से सींचने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। आज इस विकसित देश के ग्राफ में इन हिंदुओं में 15 प्रतिशत स्वास्थ्य संबंधी सेक्टर में, लगभग 5 हजार हिंदू ब्रिटेन की प्रशासनिक सेवा में, 2500 के लगभग ब्रिटेन की सेना में व तकरीबन 50 हजार हिंदू मेडिकल प्रोफेशनल जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। यही नहीं, ग्रेट ब्रिटेन का राजनीतिक आभा-मंडल भी हिंदुओं के योगदान से झिलमिल है। 2005 में शेलेष वारा नार्थवेस्ट कैम्ब्रिजशायर से पहले हिंदू सांसद चुने गए। 2010 में प्रीति पटेल हाउस ऑफ कॉमन्स में चुनी गई पहली हिंदू महिला है, जिन्हें 2016 में कैबिनेट में स्थान प्राप्त हुआ। 2017 में एक साथ 8 हिंदू सांसद (5 कंजेर्वेटर व 3 लेबर पार्टी से) चुनकर ब्रिटेन की राज-व्यवस्था का हिस्सा बने। श्री आलोक शर्मा ब्रिटेन के वाणिज्य, ऊर्जा व उद्योग के प्रभारी मंत्री रहे, जिन्हें इस बार के सर्वाधिक चर्चित विश्व पर्यावरण अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, ग्लास्गो का सम्मानीय अध्यक्ष का महत्वपूर्ण दायित्व मिला। आज हाउस ऑफ कॉमन्स में 15 तो हाउस ऑफ लॉर्ड्स में 23 पियर्स भारतीय मूल के हैं। वर्तमान में ब्रिटेन के वित्त मंत्री ऋषि सुनक भी भारतीय मूल के हैं।

आज पूरे ग्रेट ब्रिटेन में हिंदू आबादी 12 लाख के लगभग है। यह वहां की आबादी का लगभग 2 प्रतिशत है। वहां हिन्दू सर्वाधिक पर-कैपिटा टैक्स देने वालों में शामिल हैं।

लंदन के इन यादगार पलों में, मैं वहां संघ के विदेश विभाग में प्रचारक श्री चंद्रकांत को नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरे अलावा संघ के पूर्व प्रचारक श्री भागीरथ तथा स्वदेशी जागरण के राष्ट्रीय सदस्य व किसान संघ के श्री रामधन चौधरी को पूरा समय प्रदान कर पूरे प्रवास को व्यवस्थित करने व महत्वपूर्ण जानकारी देने में अतुलनीय सहयोग किया, जिनके बिना यह 15 दिवस की यात्रा इतनी यादगार व ज्ञानवर्धक नहीं हो पाती।

(लेखक, पर्यावरण परिवर्तन कार्यकर्ता एवं एडवोकेट हैं तथा राजस्थान उच्च न्यायालय में अतिरिक्त महाधिवक्ता रहे हैं)

संयुक्त राष्ट्रसंघ की जलवायु परिवर्तन संगोष्ठी, ग्रेट ब्रिटेन में पहुँचे भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य एवं संघ के प्रचारक श्री चंद्रकांत (बाएं से दूसरे)

हमारा प्राचीन साहित्य

वेद

वेद 'विद्' से बना है, जिसका अर्थ है जानना। अतः वेद का अर्थ हुआ ज्ञानराशि। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि वेदों का अर्थ कोई पुस्तक नहीं अपितु वेद का अर्थ है भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा आविष्कृत आध्यात्मिक सत्यों का संचित कोश।

माना जाता है वेद किसी मनुष्य की रचना नहीं है- अपौरुषेय हैं। कई विद्वानों का मानना है कि वेदों को 'अपौरुषेय' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि हम यह नहीं जानते कि वेदों के मंत्र किसने बनाए। माना जाता है कि सृष्टि में व्याप्त नाद (कंपन-ध्वनि) के विविध रूपों का ऋषियों ने साक्षात्कार किया तथा उन्हें वैदिक मंत्रों के रूप में अभिव्यक्त किया।

वेद की ज्ञानराशि आरंभ में परम्परा से गुरु द्वारा शिष्य को तथा पिता द्वारा पुत्र को श्रुति अर्थात् श्रवण द्वारा प्राप्त होती रही। अतः वेदों को 'श्रुति' अर्थात् सुना हुआ ज्ञान भी कहा जाता है।

वेद की ज्ञानराशि को महर्षि वेदव्यास ने चार भागों में विभाजित किया, अर्थात् वेद चार हैं-1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथर्ववेद

वेदों के दृष्टा ऋषि

ऐसे लगभग 300 ऋषि हुए हैं वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, अंगिरा, भृगु, भारद्वाज, वामदेव, कश्यप, नारद, मनु, शिवि, कण्व, गौतम, कुक्षीवान आदि प्रमुख पुरुष मंत्रदृष्टा थे।

श्रद्धा, रोमशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला, घोषा, यमी, इन्द्राणी, ऊर्वशी, दिक्षिणा, सूर्या आदि प्रमुख महिला मंत्रदृष्टा थीं।

विश्व साहित्य में वेदों को प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है। ऋग्वेद चारों वेदों में सबसे प्राचीन है।

वेदों का विषय

वेदों में सृष्टि रचना से लेकर समाज का विकास व विविध प्रकार के ज्ञान-विज्ञान (यथा गणित, आयुर्वेद, समाज शास्त्र, नीति शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अंतरिक्ष ज्ञान, पर्यावरण, वास्तुशास्त्र, विज्ञान, दर्शन, कर्म, उपासना आदि विषय) की बीज रूप में जानकारी प्राप्त होती है। इसमें श्रद्धापूर्वक की गई प्रार्थनाएं, एक ओजस्वी-तेजस्वी-चैतन्ययुक्त यश-जय की कामना वाले समाज का चित्र दिखाई देता है। यहां भारत भूमि की भक्ति का गान है तो व्यक्ति, विवाह संस्था, सभा-समिति, राष्ट्र के विकास तक की गाथा भी है। सूर्य की उत्पत्ति, विभिन्न ग्रहों की उससे दूरी व अन्य तथ्य भी तथा विज्ञान की अनेक बातें। सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र व ध्वनिशास्त्र के विकास का मूल भी वेद हैं। ●

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें - **सामान्य**-यदि 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ**- यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम** - यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. किस राक्षसी ने हनुमान जी को लंका में प्रवेश से रोकने की कोशिश की?
2. कौरव-पाण्डवों के प्र-पितामह कौन थे?
3. किस देश की राजधानी के पास देवराज इन्द्र का मंदिर बना हुआ है?
4. किस प्राचीन और पवित्र नगरी का एक नाम 'माया' भी है?
5. 'त्रिपिटक' किस सम्प्रदाय का धर्म ग्रंथ है?
6. किस गणराज्य से युद्ध के समय सिकन्दर घायल होकर स्वदेश पहुँचते ही मृत्यु को प्राप्त हो गया?
7. भारतीय गणितज्ञ आचार्य ब्रह्मगुप्त का जन्म राजस्थान के किस स्थान पर हुआ था?
8. लंदन में कर्जन वायली को मृत्यु दण्ड देने वाला क्रांतिकारी कौन था?
9. गुहिल राजवंश की स्थापना करने वाले कौन थे?
10. कर्नाटक विधान सभा ने धर्म स्वातंत्र्य विधेयक कब पारित किया?

उत्तर पृष्ठ 18 पर

सूर्य नमस्कार का बनने वाला है विश्व रिकॉर्ड

स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ पर देश-विदेश के कई संगठन मिलकर 75 करोड़ सूर्य नमस्कार लगाए जाने का रिकॉर्ड बनाने वाले हैं। इन संगठनों में बाबा रामदेव की पतंजलि योगपीठ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की क्रीड़ा भारती एवं अन्य संगठन, हार्टफुलनेस संस्था, गीता परिवार, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट, आर्ट ऑफ लिविंग, दिव्य योग मंदिर, ब्रह्मकुमारी परिवार, आर्य समाज आदि शामिल हैं। राष्ट्र सेविका समिति, विद्यार्थी परिषद, विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, आरोग्य भारती आदि संस्थाएं भी सहयोग कर रही हैं।

राजस्थान में 31 जनवरी से 7 फरवरी, 2022 तक

सम्पूर्ण देशभर में 1 जनवरी से 7 फरवरी के मध्य कभी भी 8-10 दिनों की अवधि निर्धारित कर सूर्य नमस्कार के कार्यक्रम होंगे। इसका विधिवत उद्घाटन 3 जनवरी को हैदराबाद (तेलंगाना) में किया गया। राजस्थान में यह कार्यक्रम माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी से सूर्य सप्तमी (31 जनवरी से 7 फरवरी, 2022) तक होगा।

हमारी सहभागिता कैसी रहेगी?

(अ) व्यक्तिगत

परिवार के सभी सदस्यों द्वारा कम से कम 13 सूर्य नमस्कार प्रतिदिन करना।

(ब) सामूहिक

पार्क, स्टेडियम, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, छात्रावास, मंदिर, समाज भवन, टेरेस, पार्किंग, रेलवे स्टेशन, योग केन्द्र, व्यायामशाला, संघ स्थान, व्यवसायिक व अन्य कार्यालयों आदि में सामूहिक रूप से प्रतिदिन 13 सूर्य नमस्कार करना।

(स) सार्वजनिक

किसी एक दिन सार्वजनिक रूप से भव्य कार्यक्रम रखकर उसमें सामूहिक सूर्य नमस्कार करना।

केन्द्र व राज्य सरकारों का सहयोग

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में भारत सरकार के आयुष, शिक्षा तथा विदेश मंत्रालय सहयोग कर रहे हैं। अनेक राज्य सरकारों से भी सहयोग मिल रहा है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 16 दिसम्बर को परिपत्र जारी कर कहा है कि 'आजादी का अमृत महोत्सव' के बैनर तले 'राष्ट्रीय योगासन खेल महासंघ' ने निर्णय किया है कि 1 जनवरी से 7 फरवरी तक 75 करोड़ सूर्य नमस्कार की परियोजना चलाई जाएगी।

यूजीसी के निर्देश

यूजीसी (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) ने 29 दिसम्बर,2021 को एक परिपत्र जारी कर सभी उच्च शिक्षण संस्थाओं और संबंद्ध महाविद्यालयों से अपने विद्यार्थियों को सूर्य नमस्कार में भाग लेने का अनुरोध किया है। 26 जनवरी,2022 को संगीतमय सूर्य नमस्कार राष्ट्रध्वज तिरंगे के सामने किया जाएगा। यूजीसी के अनुसार 30 राज्यों के 30 हजार संस्थानों के 3 लाख विद्यार्थी इसमें शामिल होंगे। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए महाविद्यालयों को वेबसाइट पर अपना पंजीकरण कराना है।

मुस्लिम बोर्ड का विरोध

यह कैसी पंथ निरपेक्षता है और यह देश में कैसी आजादी आई है कि सूर्य नमस्कार जैसे शारीरिक कार्यक्रम को भी इस देश में मजहब के नाम पर विरोध झेलना पड़ रहा है।

मुसलमानों के संगठन एआईएमपीएल (ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड) ने यूजीसी द्वारा जारी परिपत्र का विरोध किया है और कहा है कि सूर्य नमस्कार सूर्य पूजा का एक रूप है और इस्लाम में सूर्य को देवता के रूप में पूजा करने की अनुमति नहीं है।

विद्यालयों में सूर्य नमस्कार का अभ्यास करते विद्यार्थी

घुमंतू समुदाय को समाज से जोड़ने की आवश्यकता- दुर्गादास

पत्रकारों से वार्ता करते श्री दुर्गादास, साथ में हैं पाथेय कण के प्रबंध संपादक श्री माणकचंद

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज की मुख्यधारा से अलग-थलग हो गए घुमंतू समुदाय को वापस समाज से जोड़ने का कार्य कर रहा है। यह कहना है अखिल भारतीय घुमंतू कार्य प्रमुख श्री दुर्गादास का। उन्होंने गत 8 जनवरी को जयपुर में पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि घुमंतू समुदाय के लोगों ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध देश की स्वाधीनता के लिए लड़ रहे सेनानियों को कई प्रकार से मदद पहुँचाई थी, इससे नाराज होकर अंग्रेज सरकार ने कानून बनाकर इन्हें 'अपराधी' घोषित कर दिया। इसके कारण समाज से यह समुदाय अलग-थलग पड़ गया। यद्यपि अब उस कानून को हटा दिया गया है तो भी समाज का रवैया इनके प्रति वैसा ही बना हुआ है। श्री दुर्गादास ने अपनी पुस्तक 'अपने घुमंतू' को लेकर भी चर्चा की।

श्री दुर्गादास ने कहा कि घुमंतू समुदाय का समाज के विकास एवं समाज की सुरक्षा में बड़ा योगदान रहा है। ये जातियां प्राचीनकाल से चिकित्सा, व्यापार और रक्षा के पेशे से जुड़ी हुई थीं। इस समुदाय को उनका मान-सम्मान फिर से लौटाने की आवश्यकता है तथा इनकी समस्याओं को दूर कर इन्हें आर्थिक संबल प्रदान करने की आवश्यकता है। इन्हें सरकारी योजनाओं से जोड़कर इनका जीवन स्तर ऊपर उठाना होगा। इसके लिए संघ के कार्यकर्ताओं को घुमंतू जातियों की बस्ती में जाकर सेवा कार्य करने को कहा गया है।

श्री दुर्गादास ने बताया कि आज तक सरकार ने इन घुमंतू जातियों की आबादी के आंकड़े जारी नहीं किए, लेकिन मोटे अनुमान के अनुसार देश में 10 से 12 करोड़ की जनसंख्या ऐसी जातियों की होगी।

राजस्थान में घुमंतू समुदाय

कंजर	बावरिया
सांसी	भांड
कालबेलिया	धीवर
सपेरा	गड़रिया
मदारी	गरासिया
बाजीगर	घोसी
बेड़िया	जोगी
बंजारा	कुचबंद
भील	लंगा
नट	मिरासी
नायक	मोगिया

मातृभूमि के लिए बलिदान होना स्वर्ग प्राप्ति के समान-इंद्रेश कुमार

जिन देशभक्तों ने देश को स्वतंत्र कराने में अपने प्राणों की आहुति दी, उनके सम्मान में उनके वंशजों का सम्मान स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के दौरान किया जाना चाहिए। उक्त उद्गार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री इंद्रेश कुमार ने कोटा में एक कार्यक्रम में व्यक्त किए।

अंग्रेजों ने देश का 7 बार विभाजन करके 9 देशों में विभाजित कर भारतीयों के सुपुर्द किया। आज उनको एक किए जाने की आवश्यकता है। आज भारत दिग्विजय की ओर अग्रसर हो रहा है। तत्कालीन नेतृत्वकर्ता पंडित नेहरू जी की अदूरदर्शिता के कारण आजादी के पश्चात् भारत के हजारों किलोमीटर भूभाग को चीन व पाकिस्तान ने दबा लिया। आज भारत के विस्तार की आवश्यकता है। हमको अपना जन्म स्थान भी बचाना है और भूमि भी। मातृभूमि के लिए बलिदान होना स्वर्ग प्राप्ति के समान है।

उन्होंने कहा कि आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 6 लाख 30 हजार गांव व बस्तियों में कार्य है। इन कार्यों के माध्यम से भारत का उदय करने के लिए दंगा मुक्त भारत, छुआछूत मुक्त भारत, प्रदूषण मुक्त भारत तथा गरीबी मुक्त भारत का निर्माण करना होगा।

हम सब का डीएनए एक था, एक है और एक रहेगा। हम सभी को एक रहकर ही जीना होगा। अब यह देश और विभाजन नहीं चाहता है, मतांतरण नहीं चाहता है और इसीलिए हमें हमारी जड़ों को तलाशना चाहिए।

शाखा जाओ, शाखा चलाओ, स्वयंसेवक बनो और स्वयंसेवक बनाओ, बस यही सभी समस्याओं का समाधान है।

संग्रहालय में बारहठ बंधुओं की प्रतिमाएं

शाहपुरा में शहीद मेला

बारहठ परिवार के बलिदान को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा- श्री मेघवाल

संग्रहालय में प्रदर्शित हैं क्रांतिकारियों की कटारें और बंदूकें

आज से 109 वर्ष पूर्व 23 दिसम्बर, 1912 को तत्कालीन अंग्रेजी शासक वायसराय लॉर्ड हार्डिंग पर, देश को आजाद कराने में लगे क्रांतिकारियों ने बम फेंककर, अंग्रेजी साम्राज्य को सीधी चुनौती दी थी। बम फेंकने वालों में शाहपुरा (राजस्थान) के अमर शहीद केसरी सिंह बारहठ के भाई जोरावर सिंह व पुत्र प्रताप सिंह शामिल थे।

इस घटना की स्मृति में तथा आजादी की लड़ाई में बारहठ परिवार के योगदान को याद करने के लिए पिछले पचास वर्षों से शाहपुरा (भीलवाड़ा) में 'शहीद मेला' का आयोजन किया जा रहा है। मेले का आयोजन 'श्री केसरी सिंह बारहठ स्मारक समिति' द्वारा स्थानीय नगर पालिका व अन्य लोगों के सहयोग से किया जाता है।

इस वर्ष आयोजित मेले के मुख्य समारोह को संबोधित करते हुए राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाश मेघवाल ने स्वाधीनता संघर्ष में बारहठ परिवार के योगदान की चर्चा की। उन्होंने कहा कि उनके बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। श्री मेघवाल ने निर्माण कार्य के लिए विधायक कोष से पांच लाख रुपए तथा स्मारिका निकालने के लिए अपने वेतन से एक लाख रुपए देने की घोषणा की। समारोह के मुख्य वक्ता संघ के श्री सत्यनारायण कुमावत थे।

दिल्ली की 'मातृभूमि सेवा संस्थान' को 'त्रिमूर्ति बारहठ सम्मान' दिया गया।

संग्रहालय में क्रांति निशानियां

बारहठ बंधुओं की हवेली में राजकीय संग्रहालय स्थापित है। इस संग्रहालय में तीनों क्रांतिकारी बारहठ – ठाकुर केसरी सिंह, जोरावर सिंह एवं कुंवर प्रताप सिंह की मूर्तियां हैं तथा क्रांतिकारियों के हथियार व उपयोग में लाई गई वस्तुएं संग्रहित हैं। इनमें क्रांतिकारियों की पगड़ी, घड़ी, टॉर्च, लकड़ी की खड़ाऊ, बंदूकें, कारतूस, कटारें आदि महत्वपूर्ण हैं। बंदूकें 4 से 4.5 फीट लम्बी हैं, जिनका प्रयोग क्रांतिकारी आजादी की लड़ाई में करते थे। फोटो एलबम में उस समय के मूल फोटो संग्रहित हैं।

बारहठ सेवा संस्थान व मातृ सेवा संस्था द्वारा क्रांतिकारी इतिहास पर प्रकाशित कैलेण्डरों का विमोचन

केरल के सदानंद मास्टर

● डॉ. विजय दया

छः फीट लम्बाई और मजबूत शरीर वाले केरल के सदानंद मास्टर। विद्यार्थी जीवन से ही कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ गए थे। वे कवि, साहित्य प्रेमी और अच्छे खिलाड़ी भी रहे। कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्र विरोधी कार्यों से उन्हें खिन्नता होती थी। उन्होंने बहुत सी विचारधाराओं का अध्ययन किया। उन्हें महसूस हुआ कि देश की सामाजिक समस्याओं का हल साम्यवाद के पास नहीं है। संयोग से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए। संघ कार्यकर्ताओं का सात्विक और त्यागमय जीवन उन्हें प्रभावित करता। एक दिन संघ के एक स्वयंसेवक गोकुलदास उन्हें संघ की शाखा में ले गए।

पता ही नहीं चला कि सदानंद मास्टर कब स्वयंसेवक से कार्यकर्ता बन गए। अब प्रामाणिकता से संघ कार्य का विस्तार करने लगे। उनकी मित्र मंडली कम्युनिस्टों की थी, उसमें भी संघ पहुँचने लगा। कम्युनिस्ट गांवों में सदानंद मास्टर प्रवास करते तो संघ की शाखा शुरु हो जाती। इन सब बातों से कम्युनिस्ट नेता सदानंद से नाराज ही नहीं हुए वरन् उन्हें सबक सिखाने का निर्णय ले लिया। तय हो गया कि सदानंद मास्टर जो कि छः फीट के हैं, उनकी लम्बाई दो फीट कम कर दी जाए। उनका विचार था कि ऐसा करने पर संघ की लम्बाई भी कम होगी।

एक दिन शाखा से लौटते सदानंद मास्टर को कम्युनिस्टों ने पीछे से पकड़ लिया। उन्होंने दहशत फैलाने के लिए देशी बम फेंका। फिर सदानंद मास्टर को पीटा। हमलावरों ने कहा– सदानंद 6 फीट का है, इसे चार फीट का कर दो। सदानंद को जमीन पर गिराकर कुल्हाड़ी व तलवार से घुटनों तक उनके दोनों पैर काट दिए। पैर वापस न जुड़ पाएं, इसलिए उन्हें कीचड़ में फेंक दिया। जब वे सदानंद को मार रहे थे तो उनके मुँह से आह की जगह वन्देमातरम् और भारत माता की जय निकल रही थी। सदानंद मास्टर ध्येय के साथ एकाकार हो गए थे। हमले के समय सदानंद संघ के कुन्नूर जिले के सह जिला कार्यवाह थे।

15 मिनट के पश्चात् पुलिस पहुँची उनकी सांस उखड़ रही थी, बेहोशी छा रही थी। 400 किमी. दूर कोच्ची के अस्पताल में सदानंद मास्टर को ले जाया गया। शायद सदानंद के मन में यहीं चल रहा था –

'क्या हुआ जो एक पत्ता टूट कर गिरा जमीन पर
कल नई कोंपलें आएंगी, नवपर्ण से सजेगा वृक्ष'

देवयोग से सदानंद बच गए थे, परन्तु पैर मातृभूमि को अर्पित हो चुके थे।

गत वर्ष जब 16 दिसंबर को शाखा पर प्रहार महायज्ञ हुआ तो सदानंद मास्टर ने जयपुर फुट पहनकर, सबके मना करने पर भी, जिद कर 49 प्रहार लगाए। दोनों पैरों से खून बहने लगा था, परन्तु बोले, 'अखिल भारत में प्रहार यज्ञ हो रहा है, मैं क्यों रुकूं।' उन्होंने तिपहिया वाहन बनवा लिया है ताकि गांव–गांव प्रवास कर सकें।

सदानंद मास्टर के विवाह की बात पहले से ही चल रही थी। अब दोनों पैर कट गए तो उनसे शादी कौन करेगी? अतः परिवार वालों ने आगे बात नहीं चलाई। परन्तु, जिनसे शादी की बात चल रही थी, उन्होंने कहा कि वे शादी करेंगी तो सदानंद जी से ही, अन्यथा नहीं। विवाह सम्पन्न हुआ। अब उनकी सहधर्मिणी भी सदानंद के साथ हिंदुत्व का कार्य कर रही हैं। धन्य है केरल की भूमि जहां सदानंद से स्वयंसेवक हैं और जहां उनकी अर्द्धांगिनी सी नारी है।

संघ का कार्य देश में सर्वत्र बढ़ रहा है। स्वयंसेवक अपना पसीना बहा रहे हैं। परन्तु केरल में स्वयंसेवक रक्त से मातृभूमि का अभिषेक करते हैं।

'राख हो गए हम,तो भी क्या कम है!
मातृ भू का काम निरंतर चलता रहे
स्वयं की चिता–भस्म से, राष्ट्र–शम्भू का शृंगार करेंगे।

फिल्मों में भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का प्रतिनिधित्व बढ़े – नरेन्द्र ठाकुर

भोपाल में 18 से 20 फरवरी, 2022 को होने वाले 'चित्र भारती राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल' के लिए सम्पन्न भूमि पूजन कार्यक्रम में बोलते हुए श्री नरेन्द्र ठाकुर ने कहा, यह स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है कि भारतीय फिल्म निर्माता ही भारत की संस्कृति को चोट पहुंचाने वाली फिल्म बनाते हैं। इसलिए आवश्यकता है फिल्मों में राष्ट्रीय विचारों का प्रभाव बढ़े, फिल्मों में भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का प्रतिनिधित्व बढ़े। समाज को सकारात्मक दिशा देने के लिए समाज की सकारात्मक घटनाओं व बातों पर फिल्में बनाई जानी चाहिए। जिन लोगों ने अपने जीवन का बहुत मूल्यवान समय पर्यावरण, संस्कृति, शिक्षा सहित समाज के अन्य आयामों के संवर्द्धन में लगा दिया, उन पर फ़िल्म बनानी चाहिए।

उन्होंने कहा कि फिल्में समाज को प्रभावित करती हैं। फ़िल्म में दिखाई जाने वाली बातें लोग अपने जीवन में उतारते हैं। इसलिए फ़िल्में कैसी बने, इस बारे में गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। जो अच्छा सिनेमा बन रहा है, उसकी सराहना होनी चाहिए। नये फ़िल्म निर्माताओं को तैयार करने एवं प्रोत्साहित करने के प्रयास करने चाहिए।

भारतीय चित्र साधना की संकल्पना बताते हुए उन्होंने कहा कि फ़िल्म के क्षेत्र में चित्र भारती बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। चित्र भारती का यह चौथा राष्ट्रीय आयोजन है। इससे पूर्व इंदौर, दिल्ली और कर्णावती में प्रति दो वर्ष के अंतराल पर राष्ट्रीय लघु फ़िल्म फेस्टिवल के आयोजन हुए हैं।

फिल्म समीक्षा

सरदार ऊधम सिंह
शौर्य और बलिदान की प्रतिमूर्ति

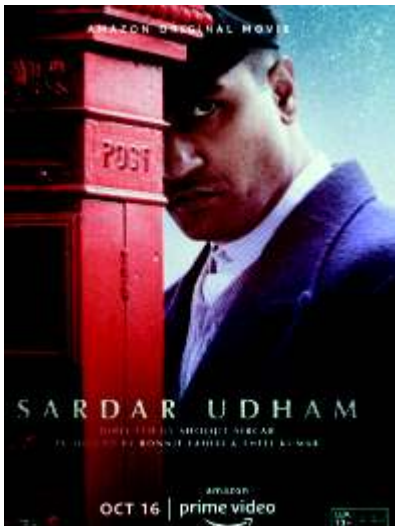

'सरदार ऊधम' में जलियांवाला बाग त्रासदी का दृश्य आत्मा को झकझोर देने वाला है। इस घटना का आज तक ऐसा प्रभावी दृश्य सिनेमा में नहीं आया। स्मृति में घर कर जाने वाला दृश्य!

फिल्म में ऐतिहासिक तथ्यों को जुटाने और फिल्माने में बहुत मेहनत की गई है। जनरल डायर की हत्या के पश्चात् सरदार ऊधम सिंह सुरक्षाकर्मियों द्वारा जकड़े हुए एक विजयी मुस्कान के साथ बाहर निकलते हैं। उस समय के क्रांतिकारी राष्ट्र हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करते थे। सरदार ऊधम सिंह अपना प्रतिशोध बिना किसी पश्चाताप के पूरा करते हैं। यह जनरल डायर की जघन्य अमानवीयता का प्रत्युत्तर है।

जलियांवाला बाग के पैशाचिक नरसंहार का साक्षी होना उन्हें हर पल अपने लक्ष्य की ओर ले जाता है। उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य भी यही बन पड़ता है। इस उद्देश्य में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध राष्ट्रवासियों के मन में एक अलख जागृत करना भी शामिल है। वे जानते हैं कि उनका यह बलिदान ऐतिहासिक बनने वाला है।

फिल्म के कथानक में कुछ रिश्तों का ताना–बाना भी गूंथा गया है। भाभी का उलाहना उन्हें रोक नहीं पाता। प्रेम की भावना रेशमा के लिए हो या एलीन के लिए, वह राष्ट्र से बड़ी नहीं है। रेशमा उनकी स्मृति में जीवित है और जेल में एलीन को वे बताते हैं कि फांसी चढ़कर वे भगत सिंह के पास जा रहे हैं। उनकी अंतिम अभिलाषा यही है कि उन्हें लोग एक क्रांतिकारी के रूप में जानें।

पर्दे पर धुआसे रंग का प्रयोग और गंभीर बैकग्राउंड स्कोर शानदार निर्देशन के साक्ष्य हैं। विक्की कौशल फिल्म की जान हैं।

कड़ाके की सर्दी और राष्ट्र सेवा का संकल्प

संघ कार्यकर्ताओं के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतिवर्ष प्रदेश के सभी जिलों में प्राथमिक शिक्षा वर्ग आयोजित करता है। इस बार राजस्थान क्षेत्र में ये वर्ग 24 से 31 दिसम्बर, 2021 के मध्य लगे। कोरोना काल के कारण पिछले 2 वर्षों से उक्त शिक्षा वर्ग नहीं लग पाए थे। सात दिवसीय शिक्षा वर्ग में विद्यालयों, महाविद्यालयों के विद्यार्थी तथा व्यवसायी-कर्मचारी वर्ग के अन्तर्गत आने वाले इंजीनियर, डॉक्टर, एडवोकेट एवं किसान स्वयंसेवकों ने संघ की कार्य पद्धति का प्रशिक्षण लेते हुए राष्ट्र सेवा का संकल्प लिया।

यह रहती है दिनचर्या

प्रातः 5:00 बजे से रात 10:30 बजे तक की दिनचर्या में विभिन्न प्रकार के शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रम होते हैं। नित्य शाखा में होने वाले एक घंटे के शारीरिक कार्यक्रम, दंड, नियुद्ध, योगासन, समता एवं कई प्रकार के खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

बौद्धिक सत्रों में स्वयंसेवकों को हिन्दू जीवन दर्शन, सामाजिक समरसता, सेवा कार्य, संघ स्थापना का इतिहास, संघ संस्थापक डॉक्टर जी व द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, संघ पर लगे प्रतिबंध, भगवा ध्वज व शाखा की दैनिक कार्य पद्धति के साथ-साथ देश की वर्तमान परिदृशा जैसे अनेक विषयों पर विस्तारपूर्वक जानकारी तथा स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया जाता है।

संघ ने कार्य की दृष्टि से राजस्थान क्षेत्र में जयपुर, जोधपुर और चित्तौड़ प्रांत बनाए हुए हैं। शिक्षा वर्ग भी इसी रचना के अनुसार संचालित होते है। प्रांत अनुसार प्राथमिक शिक्षा वर्गों की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

प्रांत	जयपुर	जोधपुर	चित्तौड़	योग
कुल वर्ग	54	31	42	127
स्थानों का प्रतिनिधित्व	1,478	1,119	1,026	3,623
विद्यालय विद्यार्थी	2,551	3,388	2,553	8,492
महाविद्यालय विद्यार्थी	1,424	588	896	2,908
व्यवसायी/ कर्मचारी	1,819	441	202	2,462
कुल शिक्षार्थी	5,794	4,417	3,651	13,862

संक्षिप्त गतिविधि

प्रकल्प दर्शन कार्यक्रम (केलवाड़ा)

शहरों के गणमान्य लोगों को वनवासी क्षेत्रों में रह रहे अपने वनवासी बंधुओं की समस्याओं से परिचित कराने के लिए तथा उन क्षेत्रों में राज. वनवासी कल्याण परिषद द्वारा चलाए जा रहे सेवा-शिक्षा के प्रकल्पों की प्रत्यक्षतः जानकारी देने के लिए प्रतिवर्ष 'प्रकल्प दर्शन' कार्यक्रम आयोजित होता है। इस वर्ष उदयपुर के सीताबाड़ी केलवाड़ा में रखे गए ऐसे ही कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एलन कोचिंग संस्थान के निदेशक श्री नवीन माहेश्वरी ने कहा कि इस सेवा कार्य में जितनी भी आहुति दी जाए, वह कम है। उन्होंने कहा कि जितना अधिक से अधिक सहयोग होगा वे करेंगे।

कार्यक्रम में राधिका लड्ढा ने कहा कि वनवासी क्षेत्र में आज भी जनजाति बंधुओं की गरीबी व अशिक्षा का लाभ उठाकर मतांतरण जैसी गतिविधियां चल रही हैं। इस संबंध में नगरीय कार्यकर्ताओं की भूमिका पर भी चर्चा हुई। कार्यक्रम में चार शहरों से 125 कार्यकर्ता केलवाड़ा पहुँचे थे।

जो दृढ़ राखे धर्म को ... (वागड़ धरती-कोठाराधाम)

वागड़ की धरती हनुमानगढ़ी कोठाराधाम (बांसवाड़ा) में गत दिनों 108 कुंडीय यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ ही महंत अच्युतानंद जी के चातुर्मास का समापन हुआ। इस अवसर पर आयोजित समारोह में विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री शिव प्रसाद ने कहा कि जनजातियों के दम पर ही संस्कृति बची हुई है। बेणेश्वर धाम पीठाधीश्वर अच्युतानंद जी ने 'जो दृढ़ राखे धर्म को ताहीं राखो करतार' का उल्लेख करते हुए कहा कि हमें अपना कर्म करना है, शेष भगवान पर छोड़ दें।

यज्ञ की पूर्णाहुति संत रघुवीरदास जी महाराज, मीठालाल जी महाराज, रामस्वरूप जी महाराज के सान्निध्य में श्रीफल होम के साथ हुई। संजलीधाम, गुजरात के दलमुख जी महाराज, मानगढ़धाम के प्रतापगिरी महाराज व विद्या भारती जनजाति समिति के सचिव मानंग पटेल भी उपस्थित रहे।

पाथेय कण पाठक सम्मेलन

टोंक

पाथेय कण के पाठक सम्मेलनों की शृंखला में गत 7 जनवरी को टोंक में सम्पन्न पाठक सम्मेलन के साथ ही स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर गोष्ठी भी हुई। पाथेय कण के प्रबंध संपादक श्री माणकचंद ने पाथेय कण के इतिहास और उसमें प्रकाशित सामग्री के बारे में अपनी बात रखी। मुख्य अतिथि श्री ज्ञानचंद गोयल ने भारत के भूले-बिसरे स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बताया। सम्मेलन में उपस्थित कई पाठकों ने पाथेय कण में प्रकाशित सामग्री की सराहना करते हुए अपने सुझाव भी दिए।

सागवाड़ा

8 जनवरी को साबला खंड के पाठक-सम्मेलन में संघ के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के सह प्रचार प्रमुख श्री मनोज कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि पाथेय कण का उद्देश्य व्यावसायिक नहीं है, इसका उद्देश्य हिंदू विचार प्रवाह को जनमन तक पहुँचाते हुए व्यापक जन-जागरण करना है। पाथेय कण डिजिटल मोड को भी विभिन्न मंचों द्वारा व्यापक रूप से प्रसार करने हेतु उन्होंने उपस्थित पाठकों से सुझाव लिए।

'हिन्दुओं, अपने आप को डि-हिप्नोटाइज करो। उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको। जागो, कमजोरी के सम्मोहन से मुक्त हो जाओ। आत्मा अनंत, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है, इसलिए कोई भी वास्तव में कमजोर नहीं है। खड़े हो जाओ, दृढ़ रहो, अपने भीतर भगवान का जयघोष करो।'

-स्वामी विवेकानन्द

(इस संबंधी पूरा लेख पढ़ने के लिए पाथेय कण पोर्टल के इस लिंक https://bit.ly/33t6dyL पर क्लिक करें)

हिंदू धर्म के अपमान के लिए

राहुल गांधी पर हो कार्रवाई

(राहुल गांधी द्वारा जयपुर में पिछले दिनों दिए गये बयान से आहत होकर एक नागरिक ने राजस्थान उच्च न्यायालय को लिखा पत्र।)

महोदय,

जयपुर में सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस लोकसभा सांसद श्रीमान् राहुल गांधी ने हिंदू धर्म एवं हिंदुत्व के बारे में अनर्गल बातें कहकर आम जन की भावना को आहत किया।

हिंदुत्व कोई वाद नहीं है। हिंदुत्व तो हिंदुओं की जीवन पद्धति है। गलत एवं भ्रामक बयान देकर राहुल जी ने श्रेष्ठतम जीवन पद्धति को ही निकृष्टतम घोषित करने की कुचेष्टा की है। समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार के अनुसार उन्होंने कहा- ''हिंदुत्ववादी किसी को मार देगा, कुछ भी बोलेगा, जला देगा, काट देगा, पीट देगा।''

राहुल गांधी के उक्त बयान से हिंदू धर्म की छवि धूमिल व हिंदुत्व का घोर अपमान हुआ है। मेरे जैसे असंख्य नागरिकों को ठेस पहुंची है। भाषण की स्वतंत्रता के साथ नागरिकों की निजता, स्वाभिमान, आस्था और अधिकारों का हनन भी जुड़ा हुआ है। अतः ऐसा तथ्यहीन बयान नहीं दिया जाना चाहिए।

महोदय, आपसे आग्रह है कि हिंदू धर्म का घोर अपमान करने, नागरिकों के मौलिक अधिकार हनन करने व जन भावना को ठेस पहुंचाने के लिए माननीय सांसद राहुल गांधी पर मुकदमा चलाकर ऐसी घिनौनी व्याख्या करने की अनाधिकृत चेष्टा के लिए उन्हें दण्डित किया जाए तथा भविष्य में ऐसी अनर्गल बातों से उन्हें रोका जाए।

स्थान - जयपुर
दिनांक- 15-12-2021

मातादीन सिंह
आरकेपुरम, खिरणी फाटक,
खातीपुरा, जयपुर

स्वदेशी जागरण मंच का

'स्वावलंबी भारत अभियान' आरम्भ

अ.भा. स्वदेशी जागरण मंच द्वारा 25 दिसम्बर, 2021 से 'स्वावलंबी भारत' अभियान आरम्भ किया गया है। इसके अंतर्गत -

- गांव आधारित विकास
- युवाओं के लिए रोजगार के अवसर
- किसानों के लिए उचित आय
- मजदूरों को उचित मजदूरी
- सभी की बुनियादी जरूरतें पूरी करने आदि बातों पर बल देने के लिए अभियान चलेगा।

राष्ट्रीय सभा- स्वदेशी जागरण मंच की राष्ट्रीय सभा 24 से 26 दिसम्बर, 2021 को ग्वालियर में सम्पन्न हुई। इन बातों पर दिया गया जोर-

- क्रिप्टो करंसी की बिक्री देश में न हो
- जैविक कृषि एवं कम पानी में पेड़ लगाना
- अमेजन, फ्लिपकार्ट, वॉलमार्ट को भारत में संचालित करने की अनुमति वापस ली जाए।
- पर्यावरण संरक्षण

राष्ट्रीय सभा में स्वदेशी जागरण मंच के विभाग सह संयोजक व ऊपर के दायित्ववान कुल 530 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

बाल प्रश्नोत्तरी -13

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 1 जनवरी का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर व्हाट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा। (प्रश्नोत्तरी क्र. 1 से 8 तक के विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा चुके हैं।) प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं।

उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 5 फरवरी, 2022

1. **वरिष्ठ प्रचारक सोहन सिंह जी का जन्म किस स्थान पर हुआ था?**
   (क) खुर्जा (ख) हरचना (ग) हेरापुर (घ) अनूपशहर
2. **उ.प्र. शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष वसीम रिजवी का नया नाम बताइए।**
   (क) जितेंद्र नारायण सिंह त्यागी (ख) राम सिम्हन
   (ग) जफर फारूकी (घ) अनवर अहमद
3. **'हिन्दू एकता महाकुंभ' का आयोजन उत्तर प्रदेश के किस स्थान पर हुआ था?**
   (क) प्रयागराज (ख) आगरा (ग) चित्रकूट (घ) बुलंदशहर
4. **'काशी विश्वनाथ धाम' का लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कब किया?**
   (क) 13 दिस. (ख) 15 दिस. (ग) 20 दिस. (घ) 25 दिस.
5. **किस महारानी ने 1777 में काशी विश्नाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कराया?**
   (क) दुर्गावती (ख) अहिल्याबाई (ग) लक्ष्मीबाई (घ) अवंतीबाई
6. **केरल के किस फिल्म निर्माता ने हिंदू धर्म अपनाने का निर्णय लिया?**
   (क)अनवर रशीद (ख)सलीम अहमद (ग)आसिफ अली (घ)अली अकबर
7. **असम में 'भोगाली बिहू' किस माह के मध्य में मनाया जाता है?**
   (क) जनवरी (ख) फरवरी (ग) दिसम्बर (घ) अप्रैल
8. **शाखाओं पर 'प्रहार महायज्ञ' का आयोजन कब किया जाता है?**
   (क) 6 दिस. (ख) 16 दिस. (ग) 20 दिस. (घ) 22 दिस.
9. **श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण की पत्नी का नाम क्या था?**
   (क) मांडवी (ख) सीता (ग) उर्मिला (घ) श्रुतकीर्ति
10. **प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले की जयंती कब मनाई जाती है?**
    (क) 3 जनवरी (ख) 8 जनवरी (ग) 12 जनवरी (घ)16 जनवरी

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वाट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -13)

उत्तर शीट - 1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( )
6.( ) 7.( ) 8.( ) 9.( ) 10.( )

नाम .....पिता का नाम.....

उम्र ..... पूर्ण पता .....

.....पिन.....

मोबाइल नं. .....

बाल प्रश्नोत्तरी-11 के परिणाम

1. दिनेश कुमार, पोकरण, जैसलमेर
2. रेणु कुमारी मूगड़, आसीन्द, भीलवाड़ा
3. चन्द्रजीत पटीर, सरदारशहर, चूरू
4. नितिन मोयल, सरदारपुरा, जोधपुर
5. प्रियांशु जाखड़, लक्ष्मणगढ़, सीकर
6. ध्रुव जीनगर, मालवाड़ा, जालौर
7. मानव सांखला, बिहारीगंज, अजमेर
8. स्वाति खण्डेलवाल, लालसोट, दौसा
9. उज्ज्वल सेन, रावतभाटा, कोटा
10. चारू जैन, भगवतगढ़, सवाईमाधोपुर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं। सही उत्तर - 1.(ख) 2.(क) 3.(ग) 4.(क) 5.(घ) 6.(क) 7.(ख) 8.(ख) 9.(घ)10.(क)

परिश्रम का भोजन

एक संत प्रतिदिन कुछ समय मजदूरी कर उससे अपने भोजन की व्यवस्था करते थे। एक धनवान व्यक्ति उनके उपदेशों से बहुत प्रभावित था। उसने एक दिन उन्हें मजदूरी करते देखा, तो हैरान रह गया।

वह शाम को उनकी कुटिया पर पहुँचा। उसने कुछ कपड़े, अनाज और फल उनके सामने रखते हुए कहा- 'आप जैसे महान् संत को मेहनत-मजदूरी करके अपना पेट भरना पड़े, यह मेरे लिए शर्म की बात है। आपके आशीर्वाद से मेरे पास पर्याप्त धन है। कृपया मेरी सेवा स्वीकार करें।

संत ने विनम्रतापूर्वक कहा- ' बिना परिश्रम किए दूसरों के धन से अपना काम चलाने वाला व्यक्ति कभी सच्ची बात नहीं कह सकता। जिसका दिया अन्न वह खाएगा, उसके प्रति पक्षपात की भावना उसे निष्पक्ष नहीं रहने देगी। बिना श्रम के किया गया भोजन किसी न किसी रूप में उसके पतन का कारण बनता है। इसलिए जब तक मेरे हाथ-पैर काम करने लायक हैं, मुझे मेहनत, मजदूरी करके अपना काम चलाने दो।'

ऐसा कहकर उन्होंने उस धनी व्यक्ति की सभी वस्तुएं वापस कर दीं।

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आप बस्तर (छत्तीसगढ़) रियासत में परलकोट के जमींदार थे।
- बस्तर में आदिवासियों को एकत्र कर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह प्रारम्भ किया।
- 20 जनवरी, 1825 को आपके ही महल के सामने आपको फांसी दी गई।

उत्तर : वीर गेंद सिंह

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी- 1.लंकिनी 2.महाराज शान्तनु 3. बैंकॉक (थाइलैंड) 4. हरिद्वार 5.बौद्ध धर्म 6. मालव गणराज्य 7.भीनमाल 8. मदन लाल ढींगरा 9. सम्राट गुहादित्य 10. 23 दिसम्बर,2021

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

18

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

सुभाष कहने को प्रथम श्रेणी के राजनीतिक बंदी थे... उन्हें अलीपुर जेल में साधारण अपराधियों की तरह रखा गया।

जेल में उनके साथ मछुआ बाजार बम केस के कैदी भी थे। पुलिस ने उन्हें अकारण ही बेरहमी से पीटना शुरु कर दिया...।

सुभाष अपनी आंखों के सामने ऐसा निर्दयी व्यवहार कैसे देख सकते थे... उन्होंने विरोध करना प्रारम्भ कर दिया..।

सुभाष ने विरोध बंद नहीं किया तो जेल प्रहरियों ने उन्हीं पर प्रहार शुरु कर दिए...

उन्हें बेरहमी से पीटा गया... वे बेहोश हो गये। भीषण मार से नेताजी तीन घंटे तक बेहोश रहे...

जेल में निरंतर अपराधियों जैसा बर्ताव होता रहा, वे हर दमन को धैर्य के साथ सहन करते रहे... जेल के सब कैदी यह सब देख व्यथित थे।

अन्ततः सुभाष अपने साथियों के साथ आमरण अनशन पर बैठ गए... सुभाष को लेकर देशभर में चिंता व आक्रोश व्याप्त था...

जेल में रहते हुए उन्हें कलकत्ता कॉरपोरेशन का मेयर चुन लिया गया।

बंगाल कौंसिल में नेताजी के आमरण अनशन को लेकर जांच की मांग उठी, किंतु उसे ठुकरा दिया गया... बाद में सुभाष की शारीरिक स्थिति को देखते हुए सरकार ने उन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया।

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
16-31 जनवरी, 2022

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

माघ कृष्ण पक्ष, वि.सं.-2078
(18 जनवरी से 1 फरवरी,2022)

जन्म दिवस

22 जनवरी (1824)	- अजीजन बाई जयंती
23 जनवरी (1897)	- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती
24 जनवरी (1914)	- वचनेश त्रिपाठी जयंती
माघ कृ.7 (25 जन.)	- स्वामी रामानन्दाचार्य जयंती
माघ कृ. 9(26 जन.)	- भीष्म पितामह जयंती
26 जनवरी (1915)	- रानी मां गाइदिन्ल्यु जयंती
28 जनवरी (1865)	- लाला लाजपत राय जयंती
29 जनवरी (1922)	- प्रो.राजेन्द्र सिंह उपाख्य 'रज्जू भैया' जयंती
29 जनवरी (1896)	- स्वामी प्रणवानंद जयंती
माघ कृ.12(29 जन.)	- 10 वें तीर्थंकर शीतल नाथ जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

19 जनवरी (1597)	- महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि
20 जनवरी (1825)	- वनवासी वीर गेंद सिंह की शहादत
21 जनवरी (1945)	- रास बिहारी बसु का निधन
21 जनवरी (1943)	- हेमू कालाणी की शहादत
30 जनवरी (1948)	- महात्मा गांधी की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

26 जनवरी	- गणतंत्र दिवस
28 जनवरी	- भगिनी निवेदिता का भारत आगमन
30 जनवरी	- कुष्ठ निवारण दिवस, शहीद दिवस

पंचांग- माघ (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-5123, वि.सं.-2078, शाके-1943
(18 जनवरी से 1 फरवरी,2022)

संकष्ट (तिलकुटा)चतुर्थी व्रत -21 जनवरी, **षट्तिला एकादशी व्रत - (स्मार्त/वैष्णव)** 28 जनवरी, **एकादशी व्रत (निम्बार्क)**- 29 जनवरी, **प्रदोष व्रत**-30 जन., **पितृकार्य अमावस्या** - 31 जन., **देवकार्य अमावस्या**- 1 फरवरी, **पंचक प्रारम्भ**-1 फरवरी (प्रातः 6:45 बजे से)

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 18 से 20 जनवरी स्वराशि **कर्क** में, 21-22 जनवरी **सिंह** राशि में, 23-24 जनवरी **कन्या** राशि में, 25-26 जनवरी **तुला** राशि में, 27-28 नीच की राशि **वृश्चिक** में, 29 से 31 जनवरी **धनु** राशि में तथा 1 फरवरी को **मकर** राशि में गोचर करेंगे।

माघ कृष्ण पक्ष में **गुरु** और **शनि** पूर्ववत कुंभ व मकर राशि में बने रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी वृष और वृश्चिक राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **बुध** यथावत मकर राशि में तथा **मंगल** व **शुक्र** पूर्ववत धनु राशि में स्थित रहेंगे।

जन्म दिवस पर शत शत नमन

स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता
सुभाष चन्द्र बोस
23 जनवरी

(जन्म-1897)

क्रांतिकारी कथाओं के लेखक
वचनेश त्रिपाठी
24 जनवरी

(1914-2006)

नागालैण्ड की क्रांतिकारी महिला
रानी गाइदिन्ल्यु
26 जनवरी

(1915-1993)

भारत सेवाश्रम संघ के संस्थापक
स्वामी प्रणवानंद
29 जनवरी

(1896-1941)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
संपादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 जनवरी, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में _____
_____
_____